



PROF. (DR.) MANORANJAN SAHU

Prof. (Dr.) Manoranjan Sahu, former Dean, Faculty of Ayurveda, Banaras Hindu University is a well-known name in the field of Shalya Tantra, the surgical discipline of Ayurveda. He has been a pioneer in reviving and popularizing ancient surgical practices of Ayurveda in accordance with contemporary science. He is globally known for his contribution in the management of anorectal diseases, especially for the innovative technique of anal fistula treatment by ksharasutra therapy. He has also made significant contributions in the field of wound management by Ayurvedic drugs.

2. Born on 2nd March, 1953 at District Midnapur, West Bengal, Prof. (Dr.) Sahu pursued his Graduation from J. B. Roy State Ayurvedic College, Calcutta in 1977 and completed M.D.(Ay.) and Ph.D. from Banaras Hindu University (BHU) in 1982 and 1986 respectively. He began his career as a Lecturer at Institute of Medicine, Kathmandu, Nepal and State Ayurvedic College, Varanasi before joining the Department of Shalya Tantra, Faculty of Ayurveda, Institute of Medical Sciences, Banaras Hindu University in 1993 where he served in the capacity of Reader, Professor and Head of the Department before his superannuation in 2018. In the meanwhile, he also served as the Professor-in-charge of Ayurveda Wing of Sir Sunder Lal Hospital and rose to the position of the Dean, Faculty of Ayurveda.

3. Prof. (Dr.) Sahu was also appointed as Founder Director of All India Institute of Ayurveda, New Delhi in 2010 by the Department of AYUSH, Ministry of Health and Family welfare, Government of India. His visionary approach for the development of surgical practices in Ayurveda led him to establish the National Resource Center on Ksharasutra Therapy at BHU as the founder coordinator in 2013. This Center of Excellence is first of its kind for the diagnosis and management of anorectal diseases with advanced facilities suitable for teaching, training and research programs.

4. Prof. (Dr.) Sahu in a career spanning over 35 years, has mentored more than 80 scholars and made significant contributions with more than 45 important research publications. A scholar of international repute, he has been the torch-bearer of Shalya Tantra and Ayurveda across the nation and abroad. He has visited several countries as an invited faculty to deliver scientific talks and perform live demonstration of his innovative technique of Ksharasutra Therapy. He has also served as the Indian Coordinator for the India-China collaboration in traditional medicine in 2015.

5. Prof. (Dr.) Sahu was felicitated by the Department of AYUSH, Government of India in 2008. He has also been honored with Vaidya Sundarlal Joshi Smriti Puraskar in 2014 by Maha Gujarat Medical Society and Vaidyaraj Haribhau Paranjape Award by the International Association for the Study of Traditional Asian Medicine (IASTAM) in 2016. For his contributions towards the development of Ayurveda and Shalya Tantra, he has also been conferred with the Fellowship of Rashtriya Ayurveda Vidyapeeth, New Delhi in 2017 and the Sushruta Award and Honorary Fellowship of National Sushruta Association, India in 2019.



प्रो. (डॉ.) मनोरंजन साहू

प्रो. (डॉ.) मनोरंजन साहू बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के आयुर्वेद संकाय के पूर्व डीन और आयुर्वेद की शल्य चिकित्सा पद्धति शल्य तंत्र के क्षेत्र में एक सुप्रसिद्ध नाम हैं। वह समसामयिक विज्ञान के अनुरूप, आयुर्वेद की प्राचीन शल्य चिकित्सा पद्धतियों को पुनर्जीवित और लोकप्रिय बनाने में अग्रणी रहे हैं। वह विश्व स्तर पर एनोरेक्टल रोगों के उपचार, विशेष रूप से क्षारसूत्र चिकित्सा द्वारा भगंदर के उपचार की अभिनव तकनीक में अपने योगदान के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने आयुर्वेदिक दवाओं द्वारा घाव के इलाज में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

2. 2 मार्च, 1953 को पश्चिम बंगाल के मिदनापुर जिले में जन्मे प्रो. (डॉ.) साहू ने 1977 में जे. बी. रॉय स्टेट आयुर्वेदिक कॉलेज, कलकत्ता से स्नातक की पढ़ाई की और बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) से 1982 और 1986 में क्रमशः एमडी (आयुर्वेद) और पीएच.डी पूरी की। उन्होंने 1993 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के शल्य तंत्र विभाग, आयुर्वेद संकाय, आयुर्विज्ञान संस्थान में सेवा से पहले चिकित्सा संस्थान, काठमांडू, नेपाल और राज्य आयुर्वेदिक कॉलेज, वाराणसी में एक व्याख्याता के रूप में अपना करियर शुरू किया। बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में ही 2018 में अपनी सेवानिवृत्ति से पहले उन्होंने रीडर, प्रोफेसर और विभाग के प्रमुख के पद पर सेवा कार्य किया। इस बीच, उन्होंने सर सुंदर लाल अस्पताल के आयुर्वेद प्रकोष्ठ के प्रोफेसर-प्रभारी के रूप में भी कार्य किया और आयुर्वेद संकाय के डीन के पद तक पहुंचे।

3. प्रो. (डॉ.) साहू को आयुष विभाग, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 2010 में अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान, नई दिल्ली के संस्थापक निदेशक के रूप में भी नियुक्त किया गया था। आयुर्वेद में शल्य चिकित्सा पद्धतियों के विकास के प्रति उनके दूरदर्शी दृष्टिकोण ने उन्हें 2013 में संस्थापक समन्वयक के रूप में बीएचयू में क्षारसूत्र थेरेपी पर राष्ट्रीय संसाधन केंद्र स्थापित करने के लिए प्रेरित किया। यह उत्कृष्टता केंद्र शिक्षण, प्रशिक्षण और अनुसंधान कार्यक्रमों के लिए उपयुक्त उन्नत सुविधा युक्त एनोरेक्टल रोगों के निदान और उपचार के लिए अपनी तरह का पहला केंद्र है।

4. प्रो. (डॉ.) साहू ने 35 वर्षों से अधिक के अपने करियर में 80 से अधिक विद्वानों का मार्गदर्शन किया है और 45 से अधिक महत्वपूर्ण शोध प्रकाशनों के द्वारा महत्वपूर्ण योगदान दिया है। अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान के रूप में, वह देश और विदेश में शल्य तंत्र और आयुर्वेद के ध्वजवाहक रहे हैं। एक आमंत्रित संकाय के तौर पर, उन्होंने वैज्ञानिक वार्ता करने और क्षारसूत्र थेरेपी की अपनी अभिनव तकनीक का सजीव प्रदर्शन करने के लिए अनेक देशों की यात्रा की है। उन्होंने 2015 में पारंपरिक चिकित्सा में भारत-चीन सहयोग में भारतीय समन्वयक के रूप में भी कार्य किया है।

5. प्रो. (डॉ.) साहू को 2008 में आयुष विभाग, भारत सरकार द्वारा सम्मानित किया गया था। उन्हें महा गुजरात मेडिकल सोसाइटी द्वारा 2014 में वैद्य सुंदरलाल जोशी स्मृति पुरस्कार और 2016 में इंटरनेशनल एसोसिएशन फॉर द स्टडी ऑफ ट्रेडिशनल एशियन मेडिसिन (आईएसटीएम) द्वारा वैद्यराज हरिभाऊ परांजपे पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया है। आयुर्वेद और शल्य तंत्र के विकास में उनके योगदान के लिए, उन्हें 2017 में राष्ट्रीय आयुर्वेद विद्यापीठ, नई दिल्ली की फेलोशिप और 2019 में राष्ट्रीय सुश्रुत एसोसिएशन, भारत के सुश्रुत पुरस्कार और मानद फेलोशिप से भी सम्मानित किया गया है।